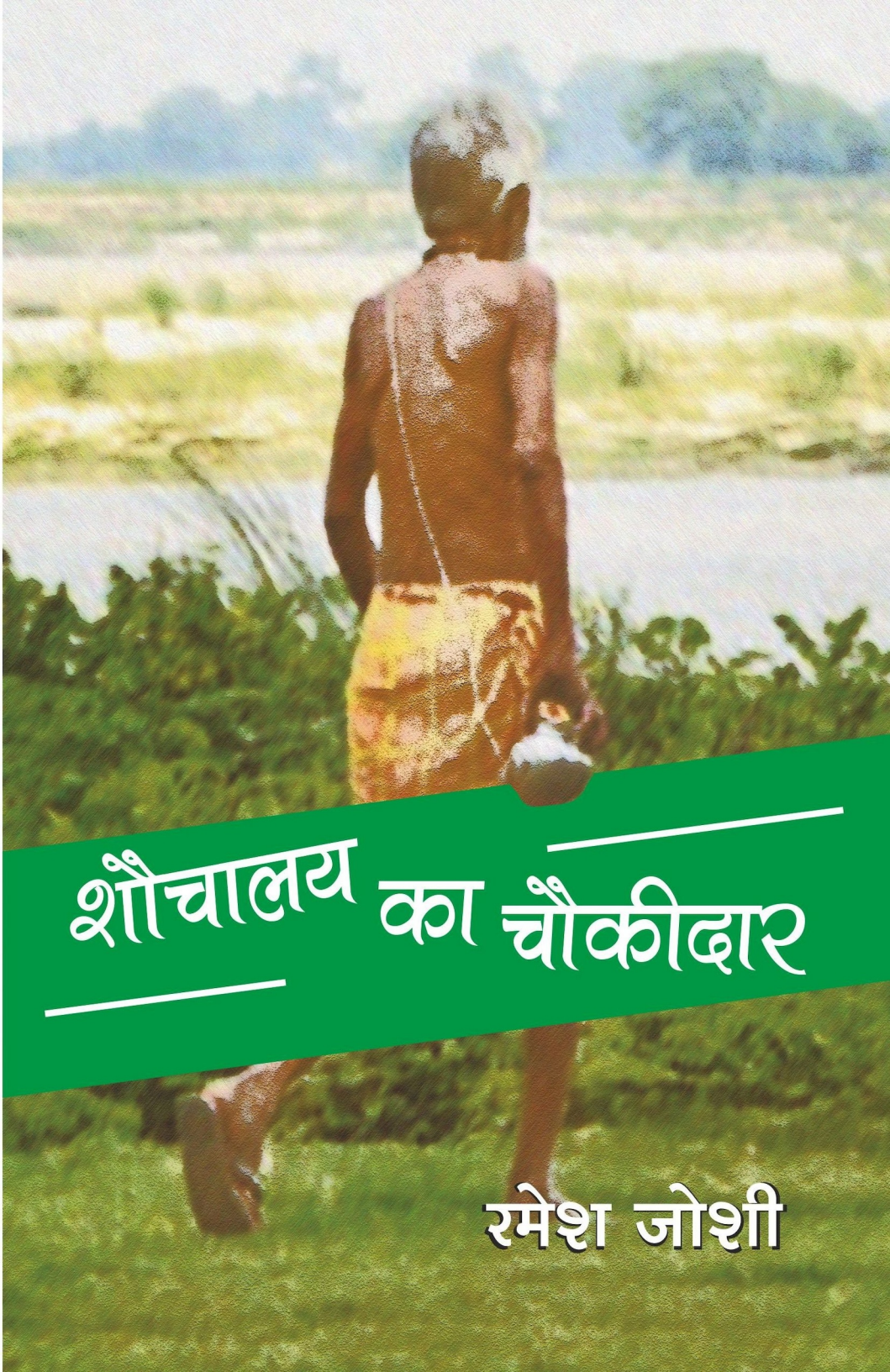

शौचालय का चौकीदार

रमेश जोशी

शौचालय का चौकीदार

(लघु हास्य-व्यंग्य आलेख)

(21 जनवरी 2019 से 13 सितम्बर 2019 तक)

रमेश जोशी की प्रकाशित पुस्तकें क्रमानुसार

1. कर्जे के ठाठ (हास्य-व्यंग्य कुण्डलिया संकलन)
2. रामधुन (हास्य-व्यंग्य कुण्डलिया संकलन)
3. पिता (कविता संकलन)
4. रास्ते में अटकी उपलब्धियाँ (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
5. बेगाने मौसम (गीतिका संकलन)
6. माई लेटर्स टू जार्ज बुश (हास्य-व्यंग्य पत्र संकलन)
7. कौन सुने इकतारा (गीतिका संकलन)
8. कुड़क मुर्गियों का लोकतंत्र (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
9. निरगुन कौन देस को बासी (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
10. देवता होने का दुःख (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
11. झुमका खोने की स्वर्ण जयंती (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
12. मूर्तियों से बँधे पशु (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
13. लीला का लायसेंस (हास्य-व्यंग्य पत्र संकलन)
14. ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया (हास्य-व्यंग्य पत्र संकलन)
15. लोकतंत्र का ब्लू व्हेल गेम (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
16. ईश्वर के साथ सेल्फी (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
17. शौचालय का चौकीदार (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)

शौचालय का चौकीदार

रमेश जोशी

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2024

ISBN 978-93-90973-44-6

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-45506552, 7291920186, 09350809192

www : anuugyabooks.com

आवरण : किनेसिस क्रिएटिव ग्राफिक्स, भोपाल

अनुज्ञा बुक्स द्वारा भारत में मुद्रित

SHOUCHALYA KA CHOUKIDAR

***Prose Satire** by* **Ramesh Joshi**

निराश, दुःखी और अपराधग्रस्त मन से
दुनिया की उन सभी बेटियों के नाम
जिन्हें इस बड़बोले और कुंठित समय में
मरणान्तक यातना झेलने के लिए
विवश होना पड़ा

अपनी बात

हमारे पाँच हजार वर्षों के ज्ञात और अल्पज्ञात इतिहास में सभ्यता, संस्कृति, सेवा, धर्म, जन कल्याण, न्याय, समानता के उपदेशों और आदर्शों की जो परिणति इस समय दिखाई दे रही है वह भयावह है। समाज की स्थापना ही कमजोर को गरिमापूर्ण जीवन देने के बड़े विचार से होती है। उसी विचार की स्थिति यह है कि दुनिया में सब कुछ होते हुए भी चंद लोगों की महत्त्वाकांक्षा, निष्करुणा और स्वार्थपरता के चलते करोड़ों लोग भूखे, कुपोषित, बेघर, अपमानित, शरणार्थी, अमानवीय दुःखों से पीड़ित और असुरक्षित हैं।

लोक कल्याण का ठेका लिए हुए सेवकों के आचरणों की विडंबनाओं में ही जीव जगत के इन कष्टों के कारण निहित हैं। इन आलेखों से इन कारणों को पहचानने में मदद मिल सकती है। इसी की पड़ताल करते 21 जनवरी 2019 से 13 सितम्बर 2019 तक के कालखंड में फैले, तोताराम के साथ संवाद शैली में लिखे गए, आलेखों का यह नवाँ संकलन है। ये आलेख अपने चित्रों और तारीखों से आपको उस समय और सन्दर्भ में ले जाने में सक्षम होंगे।

आज 25 दिसंबर है। सबसे लम्बी रात। आलोकधन्वा के उदय का विलंबित क्षण। आशा और विश्वासों के डगमगाने का निर्णायक पल। लेकिन तय है कि कल की रात आज से छोटी होगी। प्रतीक्षा के पल कम हो जाएँगे। कुंठाओं की बर्फ पिघलेगी, ठिठुरन भरी सुबह गुनगुनी हो चलेगी। सृष्टि के साथ-साथ मनुष्य की सहज संवाद और संवेदना वाली चेतना जागेगी। यही आशावाद एक लेखक को अन्धता, अविवेक और अनौचित्य के सामने खड़े होने की हिम्मत देता है। वह लड़े बिना नहीं हारना चाहता। और हार तो कभी नहीं मानना चाहता। और जब तक कोई हार नहीं मानता तब तक आप उसे हारा हुआ नहीं कह सकते।

संवाद कीजिए, साहस जुटाइए।

'आओ हाथ पकड़ लें कसकर
हम दोनों का साझा डर है'।

सेल्फी में मगन आत्मरति ग्रस्त समय से पूछें-

'मुखड़ा क्या देखे दर्पण में
तेरे दया धरम नहिं मन में'।

इस पुस्तक में आए सभी फोटो, कार्टूनों, सन्दर्भों, उद्धरणों आदि के लिए सभी संबंधित कलाकारों का हार्दिक आभार।

25 दिसंबर 2019 **-रमेश जोशी**
सीकर (राजस्थान)

अनुक्रम

1. हमारी दूसरी शादी 11
2. तुक की मज़बूरी 12
3. उत्तरायण-दक्षिणायन 13
4. उनका पचपन, इनका पचपन और हमारा बचपन 15
5. चंचल लोलिताएँ और वार्धक्य की कुंठा 16
6. दिल्ली में भूख हड़ताल 18
7. राष्ट्रगान बनाम पार्टीगान 19
8. मंत्रा मिशन 20
9. परोपकारी पुश अप्स 22
10. हिसाब-किताब 23
11. सबसे बड़ी गीता 25
12. थर्ड प्लेस और थर्ड क्लास 26
13. मधुमय अभिशाप 27
14. ....और मैं जवाँ 28
15. अभिनन्दन का अर्थ 29
16. एक रात शिव के साथ 31
17. आतंरिक लोकतंत्र उर्फ़ वीर रस का मौसम 32
18. मास्टर, तू कहीं जाता क्यों नहीं? 34
19. मूँछ और बल 35
20. शादी के आकर्षण 37
21. डोंट कॉल मी तोता 38
22. समस्या की जड़ 39
23. जय जवान से जय दुकान तक 41
24. 'फ़्लाइंग' किस का मनोविज्ञान 42
25. मैं चौकीदार नहीं हूँ 44
26. चार दिन की चाँदनी 45
27. मैं चौकीदार हूँ 47
28. नौकरियों की क्या कमी है? 48
29. स्वाभिमान को ठेस 50
30. लोकतंत्र का संदेह अलंकार 51

31. भारत भारती पुरस्कार 53
32. रमापति शास्त्री का रामचरित और लोकतंत्र की लम्पट-लीला 55
33. एक साल के लिए चुनाव स्थगित 56
34. हम चांस नहीं देते 59
35. शौचालय का चौकीदार 60
36. लाला वाला हिसाब-किताब 62
37. तोताराम का ब्लेक बॉक्स 63
38. तोताराम से साक्षात्कार 65
39. साधन और साधना 66
40. तोताराम का नामांकन 67
41. पूड़ी-कचौड़ी की खुशबू 69
42. शपथ-ग्रहण समारोह 70
43. दाल रायसीना उर्फ़ खून-पसीना 72
44. दीपं तले अन्धकारम् 73
45. तोताराम का तरबूज-तुलादान 75
46. गीत की जाति 76
47. तोताराम की जल-समाधि 77
48. उठ जाग मुसाफिर... 79
49. नारा और डर 80
50. उलटा नाम जपत जग जाना 82
51. रिस्किया नेता 84
52. एम टू समिट 85
53. बाबा बैटेश्वरानंद : बीटिंग, बैटिंग या सेवा 86
54. मोदी जी नाराज़ हैं 87
55. राजावत, राजा और राजा का बाप 89
56. किसके बन्दर : अली के या बली के 90
57. कान पकड़ासन 92
58. बजट-विश्लेषण 93
59. कबीर की अलार्म घड़ी 95
60. कौन ना मर जाय, ऐ ख़ुदा 97
61. ट्रंप ओबामा से क्यों चिढ़ते हैं 99
62. सिंह इज सिंह 100
63. काम किसी का, नाम किसी का 101
64. मियाँ, मुर्गी है कोई विधायक नहीं 104

65. मानवाधिकार और महाभारत 105
66. कौन सा काम सांसद नहीं करते 107
67 . डंके की चोट या डंडे की चोट 108
68. हम किसके वंशज हैं 109
69. तोताराम का इन्स्टा-ज्ञान 111
70. इधर-उधर की बात 113
71. ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी उर्फ़ विकास के गड्ढे 114
72. मोदी जी का राम जी कनेक्शन 115
73. आप न चाहें तो भी 117
74. जय श्रीराम बोलने का सही समय 118
75. कूटनीति का 'बागों में बहार है' सिद्धांत 120
76. विनम्र शुभकामना का एक दिन 121
77. हड्डियों की मजबूती 124
78. और करो दरवाज़ा बंद 125
79. लोकतंत्र का लालबुझक्कड़त्व 127
80. राम के वंशज 129
81. मोदी जी ने ग्रिल्स को ही ग्रिल कर दिया होगा 131
82. स्वतंत्रता-दिवस की बधाई 132
83. चालीस ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था 133
84. देशभक्ति का मापदंड 135
85. मोदी है तो मुमकिन है 136
86. राजनीति का नव-ग्रह-पूजन 138
87. हँसूँ या रोऊँ 139
88. पाँच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में हमारा योगदान 142
89. मोदी जी की अंग्रेजी और ट्रंप की हिंदी 144
90. शाह का जिहाद 145
91. नंदी, आस्था और पाकिस्तान 147
92. एक अचर्चित चाय 148
93. आस्था के ए.के. 47 150
94. ऐ भाई ज़रा देख के चलो.... 152
95. क्रिकेट कोचिंग की तैयारी 153
96. चमचागीरी के खतरे 154
97. आजीवन प्रधान मंत्री 157
98. मूँछ-भत्ता और पूँछ-भत्ता 159

1. हमारी दूसरी शादी

आज तोताराम आते ही बोला– मास्टर, मोदी जी भले कितने ही व्यस्त हों लेकिन जनता के सुख-दुःख में शामिल होने के लिए समय निकाल ही लेते हैं। तू भी अपनी शादी का कार्ड उन्हें ज़रूर भेजना।

हमने कहा– ठीक है, मोदी जी किसी का दिल नहीं तोड़ते। वे प्रियंका चोपड़ा की शादी में भी बधाई देने पहुँचे थे। और अब गुजरात के किसी युवराज ने उन्हें अपनी शादी का कार्ड भेजा तो उन्होंने उसकी देश भक्ति की प्रशंसा करते हुए उत्तर भी दिया था। अब यह पता नहीं कि यह बधाई उस युवराज को रफाल सौदे में मोदी सरकार की प्रशंसा करने के पुरस्कार स्वरूप दी गई है या शादी की सफलता के लिए दी गई है। वैसे हमारा तो अनुभव यही है कि देशभक्ति की मात्रा ज्यादा होने पर व्यक्ति सिद्धार्थ की तरह बुद्ध बनने के लिए, की-कराई शादी को भी निरस्त करके देश-दुनिया की सेवा करने के लिए घर छोड़कर निकल पड़ता है। इसलिए यदि इस युवराज को सफल वैवाहिक जीवन की कामना है तो फिर मनमोहन सिंह जी से आशीर्वाद लेना चाहिए था।

वैसे हम न तो कहीं के युवराज हैं, न प्रियंका चोपड़ा की तरह सेलेब्रिटी। और फिर शादी किसकी?

बोला– इस साल 10 मई को तेरी शादी को साठ साल पूरे हो जाएँगे। शादी के साठ वर्ष पूरे होने पर दुबारा शादी करने का भी एक संस्कार दक्षिण भारत में मनाया जाता है। वही मना ले। उसीके कार्ड छपवाकर उसमें आठ लाख वार्षिक से कम आय वाले सवर्णों और अल्पसंख्यकों को 10% आरक्षण देने, आयुष योजना, प्रधानमंत्री जन औषधि योजना की प्रशंसा करते हुए कुछ वाक्य डाल दे। फिर देख तेरे वैवाहिक निमंत्रण-पत्र का उत्तर आता है कि नहीं।

हमने कहा– लेकिन उससे क्या होगा? बिना बात कार्ड छपवाने का खर्चा क्यों करें? हाँ, यदि अब भी वे पे कमीशन का एरियर दे दें तो यह काम भी कर सकते हैं।

बोला– इसके लिए भी एक आइडिया है। अपने निमंत्रण-पत्र में मोटे अक्षरों में एक लाइन यह भी जोड़ दे कि मेहमानों के लिए जलपान की व्यवस्था उस दिन तक पे कमीशन का एरियर मिल जाने की स्थिति में ही की जाएगी।

हमने कहा– तोताराम, आइडिया तो बढ़िया है लेकिन कहीं मोदी जी की शुभकामनाओं से ऐसा तो नहीं हो जाएगा कि हम देश सेवा के लिए तेरी भाभी को छोड़कर निकल जाएँ। ऐसा हुआ तो मुश्किल हो जाएगी।